क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?

पेशकश :

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशल

क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?

पेशकश : अ़ब्दे मुस्तफ़ा ऑफिशल

SABIYA VIRTUAL PUBLICATION

Contents

रोज़े क़ियामत लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जायेगा यानी वालिद के नाम के साथ या वालिदा या किसी और के नाम के साथ?

इस बारे में मुख्तलिफ क़िस्म की रिवायात और अक़वाल मिलते हैं।

इसकी तहक़ीक़ के लिये हमने कुछ हवाले जमा किये हैं जिन्हें यहाँ नक़्ल करेंगे। इनको पढ़ने के बाद ये वाज़ेह हो जायेगा कि जो रिवायात और अक़वाल इस बारे में मज़कूर हैं, इनमें ज़्यादा सही कौन है या फिर अगर कोई ततबीक़ की सूरत है तो क्या है और अगर नहीं तो फिर इस इख़्तिलाफ़ को हमें क्या समझना चाहिये।

उलमा -ए- अहले सुन्नत की किताबों के साथ साथ चंद बद-मज़हबो की किताबों के हवाले भी इस में शामिल किये गये हैं जिसका मक़्सद इस मसअले से मुतल्लिक़ा ज़्यादा बातों को सामने रख कर इसे वाज़ेह करना है।

फ़क़ीहे मिल्लत हज़रत अल्लामा मुफ़्ती जलालुद्दीन अहमद अमजदी अलैहिर्रहमा से सवाल किया गया कि मैदाने महशर में लोग अपनी माँ के नाम के साथ पुकारे जायेंगे या बाप के नाम से?

आप रहमतुल्लाह त'आला अलैह जवाब में लिखते हैं कि मैदाने महशर में लोग अपनी माँ की तरफ़ मंसूब कर के बुलाये जायेंगे। जैसा कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी अलैहिर्रहमा तहरीर फ़रमाते हैं कि "रोज़े क़ियामत शाने सत्तारी जलवा फरमायेगी और लोग अपनी माँओं की तरफ मंसूब कर के बुलाये जायेंगे।

(احکام شریعت، حصّہ دوم، ص198)

(فتاوی فیض الرسول، ج2، ص527)

फ़तावा यार अलविय्या में एक सवाल है कि ज़ैद कहता है कि बरोज़े क़ियामत अल्लाह त'आला अपने बंदों को माँ के नाम से उठायेगा लेकिन बकर ने इस पर ऐतराज़ करते हुये कहा कि नहीं अल्लाह त'आला बाप के नाम से उठायेगा। तो ज़ैद का कहना सहीह है या बकर का मा हवाला जवाब नवाज़ें।

जवाब में तहरीर है कि बकर का क़ौल सहीह है। हदीसे पाक में है :

> "عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰهِ ﷺ تُدْعَوْنَ یَوْمَ الْقِیَامَةِ بِاَسْمَائِکُمْ وَاَسْمَاءِ اٰبَائِکُمْ فَاَحْسِنُ اَسْمَائَکُمْ"۔ (ابو داود؛ص٦٧٦)
>
> हज़रते अबू दरदा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु त'आला अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया : "क़ियामत के दिन तुम को तुम्हारे नाम और तुम्हारे बापों के नाम से पुकारा जायेगा। लिहाज़ा अपने नाम अच्छे रखो।

(فتاوی یار علویہ، ص89)

मुफ़्ती -ए- आज़म पाकिस्तान, हज़रत अल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुनीबुर्रहमान दामत बरकातुहुमुल आलिया से सवाल किया गया कि हमें एक मसअला दरपेश है, वो मसअला ये है कि जब क़ियामात के दिन मैदाने हश्र में पुकार होगी तो इंसान को किस नाम के साथ पुकारा जायेगा? अपनी वालिदा के नाम से या अपने वालिद के नाम से पुकारा जायेगा? हमें क़ुरआने मजीद और हदीसे पाक की रोशनी में इस का जवाब चाहिये।

आप दामत बरकातुहुमुल आलिया जवाब में तहरीर फ़रमाते हैं कि क़ुरआने मजीद की किसी आयत में सराहत के साथ ये मसअला बयान नहीं किया गया। अल्बत्ता क़ुरआने मजीद की आयात के तहत मुफ़स्सिरीने किराम ने इस मसअले पर गुफ्तगू फ़रमाई है :

يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۭ بِاِمَامِهِمْ ۚ

(بنی اسرائیل، 17:71)

"जिस दिन हम सब लोगों को उन के पेशवाओं के हमराह बुलायेंगे"

इस आयते मुबारका का वाज़ेह माना तो ये है कि क़ियामत में लोगों को उन के पेशवाओं के हमराह हिसाबो किताब और सवालो जवाब के लिये बुलाया जायेगा। अम्बिया -ए- किराम अपनी-अपनी उम्मतों के हमराह बारगाहे रब्बुल आलमीन में हाज़िर होंगे और आइम्मा

के हमराह उन के पैरोकारों को तलब किया जायेगा। चुनाँचे जो गुमराह और बातिल परस्त लोग हैं वो अपनी उज़्र ख्वाही इस अंदाज़ में करेंगे :

وَ قَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَ كُبَرَآءَنَا فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا (٦٧) رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ وَ الْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا (٦٨) (الاحزاب:ـ)

ऐ हमारे परवरदिगार! हम ने अपने सरदारों और वज़ीरो की पैरवी की तो उन्होने हमें राह से भटकाया। ऐ हमारे परवरदिगार उन्हें (हमारे मुक़ाबले में) दोगुना अज़ाब दे और उन पर भारी लानत फ़रमा।

ताहम् बाज़ मुफस्सिरीन ने ज़ेरे बहस आयत में लफ्ज़ "इमाम" को उम्मे (बमाना माँ) की जमा क़रार देकर एक नये अंदाज़ से इस की तफ़्सीर की है। ज़ैल में हम चंद तफ़ासीर के हवाला जात दर्ज कर रहे हैं और ऐसा मालूम होता है कि इस आयत की तफ़्सीर का ये नया अंदाज़ सब से पहले अल्लामा ज़म्खशरी साहिबे "तफ़्सीरे किशाफ़" ने इख़्तियार किया है।

नये अंदाज़ की तफ़्सीर ये है कि 'इमाम' उम्मे (बमाना माँ) की जमा है और ये कि लोगों को क़ियामात के दिन उन की माँओं की निस्बत से पुकारा जायेगा और (बापों के बजाए) माँओं के नाम के साथ पुकारने में हिक्मत ये है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हक़ की पास्दारी हो जाये और हज़रत हसन व हुसैन का शर्फ़ ज़ाहिर करना मक़सूद है और ये कि जो लोग औलादुज़्ज़िना हैं उन की (सरे आम) रुस्वाई न हो"।

(تفسیر کشاف، ج۲، ص۶۳، دار احیاء التراث العربی بیروت)

अल्लामा ज़म्खशरी की तफ़्सीर का हवाला अल्लामा अल्वसी हनफ़ी बग़दादी ने भी दिया है लेकिन फिर उसे दलाइल से रद्द करते हुये फरमाते हैं :

साहिबे तफ़्सीरे किशाफ़ ने मुहम्मद बिन काब से इसे रिवायत किया है और इस तफ़्सीर के क़ाबिले क़बूल ना होने के दलाइल ये हैं कि अव्वलन इसीलिये कि उम्मे की जमा इमाम ग़ैरे मारुफ़ है और इस की जमा उम्महात है।

सानीयन इसीलिये कि ईसा अलैहिस्सलाम के हक़ की रियायत तो इस में है कि उन्हें शाने इम्तियाज़ी के तौर पर माँ के नाम से पुकारा जाये।

(यानी सब को अगर माँ के नाम से पुकारा जायेगा तो इस में हज़रते ईसा अलैहिस्सलाम का इम्तियाज़ कहाँ रहेगा? क्योंकि बाप के बग़ैर उनकी पैदाइश उन के लिये बाइसे करामत व इफ़्तिख़ार है (कयोंकि ये एक मोजिज़ा है) तो इस इफ़्तिख़ार को नुमायां करने की ज़रूरत है ना कि इस से चश्म पोशी की है इस बिना पर मजबूरन सब को माँओं की निस्बत से पुकारा जाये और हज़राते हसनैन व करीमैन का शर्फ़ तो वैसे ही कामिल दाइम है, क्योंकि इन के बाप का मर्तबा इन की माँ से ज़्यादा है और रहे "औलादुज़्ज़िना" तो इस में इन का तो कोई गुनाह नहीं है जो इन के लिये बाइसे रुस्वाई हो। रुस्वाई तो इन

की माँओं के लिये है (और ये क़ाइम रहती है) ख्वाह दूसरों को इन की माँओं के नाम से पुकारा जाये या इन के बापों के नाम से।"

इस के बाद अल्लामा आलूसी ने इन ऐतराज़ का जवाब भी दिया है जिस में इस अम्र को तस्लीम किया है कि "उम्मे" की जमा इमाम मारुफ़ नहीं है लेकिन हज़राते हसनैन व करीमैन की निस्बत माँ की तरफ़ करने से उनकी नसबी निस्बत रसूलुल्लाह ﷺ की तरफ़ होना बहुत बड़ा शर्फ़ है। इस तरह "औलादुज़्ज़िना" के रुस्वाई से बचने की भी तावील की है कि माँ की निस्बत तो दुनिया में भी लोगों को मालूम थी लेकिन बाप की निस्बत मालूम होने पर रुस्वाई होगी। लेकिन आगे चल कर वो लिखते हैं कि मुम्किन है "साहिबे किशाफ़" का मौकिफ़ किसी रिवायत पर मबनी हो, लेकिन वो हदीस सहीह के मुआरिज़ है, जिस में नबी -ए- करीम ﷺ ने फ़रमाया के क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे नामों और तुम्हारे बापों के नाम से पुकारा जायेगा।

(روح المعانی، جلد۹، صفحہ ۱۷۵-۱۷۶، مطبوعہ دارالفکر بیروت)

इमाम अबू अब्दुल्लाह बिन मुहम्मद बिन अहमद अंसारी क़ुर्तुबी मालिकी हुकमा के हवाले से लिखते हैं कि "और इमाम, उम्मे की जमा है हुकमा ने कहा कि इस में तीन हिकमतें हैं। एक ईसा अलैहिस्सलाम के सबब, दूसरी हसनैन करीमैन के शर्फ़ का इज़्हार और तीसरा ये कि औलादुज़्ज़िना की रुस्वाई ना हो। फिर लिखते हैं कि ये क़ौल महले नज़र है क्योंकि हदीस सहीह है। हज़रत इब्ने उमर रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से मरवी है कि जब अल्लाह त'आला अव्वलीन व आख़िरीन को क़ियामत के दिन जमा फरमायेगा तो हर बद अहद के लिये एक

(अलामती) झंडा होगा और कहा जायेगा कि ये फुलां बिन फुलां की बद अहदी का निशान है।

(الجامع الاحکام القرآن، ج5، ص267)

ये हदीस मुत्तफ़िक़ अलैह है, इस हदीस में "फुलां बिन फुलां" के अल्फ़ाज़ हैं ना कि "फुलां बिन फुलानी" के, ये इस बात की दलील है कि आख़िरत में लोगों को उन के नामों और उन के बापों के नामों से पुकारा जायेगा और ये उन लोगों का रद्द है जो कहते हैं कि क़ियामत के दिन लोगों को उन की माँओं की निस्बत के पुकारा जायेगा।

आप ने मुलाहिज़ा फ़रमाया कि क़ियामत के दिन माँओं के नाम के साथ पुकारे जाने वाले क़ौल को उन तमाम तर अक़्ली तौजीहात और फल्सफ़ियाना मुशगाफ़ियों के बावजूद जलीलुल क़दर मुफ़स्सिरीने किराम अल्लामा महमूद आलूसी और अल्लामा क़ुर्तुबी मालिकी ने हदीसे सहीह से म'आरिज़ होने की बिना पर रद्द किया है और हदीसे सहीह को अक़्ली तौजीहात पर तरजीह है।

हदीसे पाक में है : हज़रते अबू दरदा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया : क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे नामों और तुम्हारे बापों के नाम से पुकारा जायेगा, तो अपने नाम अच्छे रखो।

(مشکوٰۃ، ص408)

इस हदीस के तहत शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी अश'अतुल लम'आत में लिखते हैं 'बाज़ रिवायात में आया है कि रोज़े क़ियामत लोगों को माँओं के नाम से पुकारा जायेगा और इस की हिकमत ये बयान की गयी कि औलादुज़्ज़िना को शर्मसारी ना हो और हज़रते ईसा बिन मरियम के हाल की रियायत कि अल्लाह ने उनको बिन बाप के पैदा किया और हसनैन करीमैन की शराफ़ते निस्बत के इज़्हार के लिये कि रसूलुल्लाह ﷺ की निस्बत का इज़्हार हो, अगर ये रिवायत पा-ए सबूत को पहुँच जाये तो हदीस की तौजीह की जायेगी कि लफ्ज़ "आबा" तबलीग़ के तौर पर आया है (जैसे हुक्म तो मर्दो ज़न सबके लिये होता है लेकिन सीगा मुज़क्कर का आता है) और कभी आबा कहा जाता है और कभी उम्महात, ये भी हो सकता है कि बाज़ को बापों के नामों से पुकारा जाये बाज़ को माँओं के नाम से, या बाज़ मवाक़ों पर माँओं के नाम से और बाज़ मवाक़ों पर बापों के नाम से।

واللہ اعلم

(اشعۃ اللمعات، ج4، ص50، مطبوعہ لکھنؤ)

शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस दहेलवी की तावीलात व तौजीहात इस पर मौक़ूफ़ हैं कि माँ के नाम से पुकारे जाने की रिवायत सहीह है। इस हदीस की शरह में साहिबे औनुल माबूद लिखते हैं कि : तबरानी ने सनदे ज़ईफ़ के साथ रिवायत किया है, जैसा कि इब्ने कैम ने सुनन अबी दाऊद के हाशिये में अब्दुल्लाह बिन अब्बास रदिअल्लाहु त'आला अन्हुमा से रिवायत किया है कि बाज़ बंदों की पर्दादारी के लिये माँओं के नाम से पुकारा जायेगा और सुनन अबी दाऊद की

रिवायत इसी के मुतल्लिक़ से है और तबरानी की हदीस दूसरे से मुतल्लिक़ है, या ये कि बाज़ को बाप के नाम से पुकारा जायेगा और बाज़ को माँओं के नाम से।

तफ़हीमुल मसाइल जिल्द अव्वल में हम ने हदीसे सहीह को राजेह क़रार दिया था और अब भी हमारा मौकिफ़ यही है। ताहम दीगर अक़वाल, तौजीहात और तावीलात भी दर्ज कर दी हैं।

واللہ ورسولہ اعلم بالصواب

(تفہیم المسائل،ج2،ص54-58)

इसी मसअले के बारे में फ़तावा मरकज़ तरबियत इफ़्ता में एक सवाल मज़कूर है जिस का जवाब हम नक़्ल कर रहे हैं :

हदीस शरीफ़ में है :

عن ابی الدرداء رضی الله تعالیٰ عنه قال: قال رسول اللهﷺ: "انکم تدعون یوم القیامه باسمائکم و اسماء ابائکم فاحسنوا اسمائکم"۔

यानी अबू दरदा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि "क़ियामत के दिन तुम्हें तुम्हारे नामों और आबा व अजदाद के नामों से पुकारा जायेगा लिहाज़ा तुम अच्छे नाम रखो।"

(سنن ابی داوٗد شریف باب فی تفسیر السماء، ج۲، ص٦٧٦)

और बाज़ रिवायात से मालूम होता है कि क़ियामत के दिन लोग अपनी माँओं के नाम से पुकारे जायेंगे और बाज़ से अपने इमामों के नाम से पुकारा जाना मालूम होता है।

इन में तत्बीक़ ये है कि क़ियामत के दिन लोगों को मुख्तलिफ़ तौर से पुकारा जायेगा। कभी किसी को बाप के नाम से किसी को माँ के नाम से और किसी गिरोह से वाबस्ता अफ़राद को उन के इमामों के नाम से, हज़रते आदम अलैहिस्सलाम को ज़ाहिर ये है कि उन के नाम से पुकारा जायेगा।

واللہ تعالی اعلم

(مرکزِ تربیت افتاء، ج2، ص617)

वक़ारुल फ़तावा में एक सवाल है कि क़ियामत के दिन माँ के नाम से पुकारा जायेगा या बाप के नाम से? वज़ाहत से जवाब इनायत फरमायें?

जवाब में तहरीर है कि क़ियामत के दिन बाप के नाम से पुकारा जायेगा। इमाम बुखारी ने बुखारी में एक बाब बाँधा जिस का उन्वान है

"یدعی الناس بابائھم"

जिस में हदीस नक़्ल है :

ان الغادرین فع لہ لواء یوم القیامہ یقال ھذہ غدرہ فلاں ابن فلاں

(جلد دوم، ص:۹۱۲، قدیمی کتب خانہ، کراچی)

यानी क़ियामत के दिन धोखे बाज़ के लिये एक झंडा बुलंद किया जायेगा और कहा जायेगा कि ये फुलां के बेटे फुलां की धोखेबाज़ी है।

और अबू दाऊद में एक हदीस है :

انکم تدعون یوم القیامہ باسمائکم و اسماء ابائکم فاحسنوا اسمائکم

(جلد دوم، کتاب الادب، باب فی تفسیر الاسماء)

यानी क़ियामत के दिन बुलाया जायेगा तुम्हें तुम्हारे नामों और तुम्हारे बापों के नाम से लिहाज़ा अपने नाम अच्छे रखो।

इन तमाम रिवायात से ये बात वाज़ेह हो गयी कि क़ियामत के दिन बाप के नाम से पुकारा जायेगा। लोगों में जो ये बात मशहूर है कि माँ के नाम से पुकारा जायेगा, ये सहीह नहीं है।

واللہ تعالٰی اعلم

(وقار الفتاوی، ج2، ص342)

फ़तावा खलीलिया में एक सवाल है कि क़ियामत के दिन औलाद को माँ के नाम से पुकारा जायेगा या बाप के नाम से पुकारा जायेगा?

आप जवाब में लिखते हैं कि इमाम अहमद और अबू दाऊद ने अबू दरदा रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत की कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया कि क़ियामत के दिन तुम को तुम्हारे बापों के नामों से बुलाया जायेगा लिहाज़ा अच्छे नाम रखो और आला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी अलैहिर्रहमा ने फ़रमाया कि "रोज़े क़ियामत शाने सत्तारी जलवा फ़रमायेगी और लोग अपनी माँओं की तरफ़ मंसूब कर के बुलाये जायेंगे।

(احکام شریعت، حصّہ 2، ص 198)

लिहाज़ा ये कहा जायेगा कि बरोज़े क़ियामत बाज़ मक़ामात पर औलाद को बाप की तरफ़ निस्बत कर के बुलाया जायेगा जहाँ मक़्सूद औलाद के नसब की शोहरत हो और बाज़ मक़ामात पर माँ की तरफ़ निस्बत करके पुकारा जायेगा जहाँ शाने सत्तारी माँ के जुर्म को लोगों से छुपाना चाहेगी ताकि वहाँ किसी के रूबरु माँ या उस की औलाद की फ़ज़ीहते रुस्वाई ना हो। हो सकता है कि ये दाखिला -ए-जन्नत के बाद हो और वो मैदाने हश्र में।

واللہ تعالیٰ اعلم

(فتاویٰ خلیلیہ، ج 3، ص 174,173)

फ़तावा फ़ैज़ुर्रसूल में एक सवाल है कि मैदाने महशर में लोगो को अपनी माँ के नाम के साथ पुकारा जायेगा या बाप के नाम से?

जवाब में तहरीर है कि मैदाने हश्र में लोग अपनी माँ की तरफ मंसूब कर के बुलाये जायेंगे, जैसा कि आला हज़रत इमाम अहमद रज़ा बरेलवी अलैहिर्रिहमा व रिदवान तहरीर फरमाते हैं कि "रोज़े क़ियामत शाने सत्तारी जलवा फरमायेगी और लोग अपनी माँओं की तरफ मंसूब कर के बुलाये जायेंगे।

(احکام شریعت حصہ،2ص197)

وھوی سبحانہ وتعالیٰ اعلم

(فتاوی فیض الرسول،ج2،ص526)

फ़तावा फख्रे अज़हर में इसी तरह का एक सवाल मौजूद है जिसके जवाब में तहरीर है कि हदीस शरीफ में है :

"عَنْ اَبِی الدَّرْدَاءِ قَالَ قَالَ رَسُوْلُ اللّٰہِ ﷺ تُدْعَوْنَ یَوْمَ الْقِیٰامَۃِ بِاَسْمَائِکُمْ وَ اَسْمَاءِ اٰبَائِکُمْ فَاَحْسِنُ اَسْمَائَکُمْ"

यानी हज़रते अबू दाऊद रदिअल्लाहु त'आला अन्हु से रिवायत है कि अल्लाह के रसूल ﷺ ने इरशाद फरमाया कि क़ियामत के दिन तुम्हारे नामों और आबा व अज्दाद के नामों से पुकारा जायेगा लिहाज़ा तुम अच्छे नाम रखो।

(ابو داود، ص٦٧٦)

इस हदीस की शरह में हुज़ूर हकीमुल उम्मत मुफ्ती अहमद यार खान नईमी अलैहिर्रहमा तहरीर फरमाते हैं कि बाज़ रिवायात में ये कि इंसानो को उनकी माँ के नाम से पुकारा जायेगा ग़ालिबन इसकी हिकमत ये है कि हरामी लोग रुस्वा ना हो या हज़रते ईसा अलैहिस्स्लाम के इज़्हारे शराफत के लिये या हसनैने करीमैन की अज़मत के इज़्हार के लिये कि हज़रते फातिमा ज़हरा की निस्बत उनको हुज़ूर ﷺ की सोहबत का शर्फ हासिल हो जाये। मगर इन रिवायात में तआरुज़ नहीं कि क़ियामत के अव्वल वक़्त में माँओं के नाम से या सबके सामने माँ के तन्हाई में बाप के नाम से।

(مرآۃ المناجیح، ج6، ص291)

واللہ تعالیٰ اعلم بالصواب

बुखारी शरीफ़ में एक बाब है जिस का नाम ही है :

"باب مايدعى الناس بآبائهم"

यानी लोगों को उन के आबा के नाम से पुकारा जायेगा।

इस बाब के तहत इमाम बुख़ारी रिवायत करते है :

नबी -ए- करीम ﷺ ने इरशाद फ़रमाया कि अहद शिकन के लिये क़ियामत के दिन एक झंडा बुलंद किया जायेगा और कहा जायेगा कि ये फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ की अहद शिकनी है ।

(صحیح بخاری)

इस हदीस की शरह में अल्लामा अयिनी लिखते हैं कि इस में फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ आया है इस से मालूम हुआ कि क़ियामत के दिन आबा के नाम से पुकारा जायेगा।

(عمدۃ القاری)

हाफ़िज़ इब्ने हजर अस्क़लानी लिखते हैं कि इस में उन का रद्द है जिन लोगो का ज़ा'म सिर्फ ये है कि क़ियामत के दिन लोगों को उनकी माँओं के नाम के साथ पुकारा जायेगा।

अल्लामा इब्ने हजर अस्क़लानी ने उन अहदीस के ज़ाफ़ (ज़ईफ़ होने का) =का भी ज़िक्र किया है जिन में माँओं के नाम के साथ पुकारने की तशरीह है।

(انظر: نعم الباری، ج12، ص806،807)

अल्लामा मुल्ला अली क़ारी ने मौज़ूआते कबीर में ऐसी रिवायत को दर्ज किया है जिन में माँओं के नाम से पुकारा जाने का ज़िक्र मिलता है।

चंद ऐसी रिवायत लिखने के बाद फ़िर आप ने लिखा है कि हो सकता है कि हालात मुख़्तलिफ़ हों। (यानी कहीं बाप के नाम से पुकारा जायेगा और कहीं माँ के नाम से)

(موضوعات کبیر، ص464)

जैसा कि हम ने शुरू में लिखा था कि उलमा -ए- अहले सुन्नत के अलावा कुछ दूसरे मकातिबे फ़िक्र के लोगों की कुतुब के हवाले भी शामिल किये जायेंगे तो दर्ज ज़ेल सुतूर में अब ऐसे कुछ हवाले नक़्ल किये जा रहे हैं और चंद फ़तावा भी जिन का मक़सूद इस मसले पर तफ़्सीली बहस है।

अशरफुल फ़तवा में है :

सवाल : क्या क़ियामत के दिन बंदे को माँ के नाम से उठाया जायेगा?

जवाब : क़ियामत के दिन बंदे को माँ के नाम से नहीं बल्कि बाप के नाम से जाना जायेगा। मिश्कात शरीफ़ की हदीसे मुबारका में इस की वज़ाहत मौजूद है ।

أبي الدرداء رضی الله عنه قال قال رسول الله صلی الله علیه تدعون یوم القیامة باسمائکم واسما آبائکم فاحسنو اسمائکم اسماءکم رواه أحمد وأبو داود

(اشرف الفتاوی، ص288)

फतावा अलीमिया में जुबैर अली ज़ई लिखता है :

क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जायेगा ?

अल मुअज्जमुल कबीर अल तबरानी में है कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फ़रमाया :

बेशक अल्लाह त'आला लोगों को क़ियामत के दिन उन की माँओं के नाम के साथ पुकारेगा ताकि उस के बन्दों की पर्दा पोशी रहे।

इस रिवायत का एक रावी मतरूक है। इस रिवायत को मौज़ू साबित करने के लिए कई दलाइल को नक़्ल करने के बाद आख़िर में लिखा है कि ये रिवायत मौज़ू है और इस के मुक़ाबले में बुखारी की रिवायत मौजूद है कि फ़ुलाँ बिन फ़ुलाँ कह कर पुकारा जायेगा यानी बाप के नाम से पुकारा जायेगा।

(فتاوی علمیہ ج2، ص52،53)

दारुल उलूम देवबंद का फ़तवा :

सवाल : आख़िरत में बच्चों को माँ के नाम से पुकारा जायेगा या बाप के नाम से? क़ुरआन और हदीस के हवाले से बता दीजिये। कुछ लोग लिखते हैं कि बाप का दर्जा अव्वल है, इसीलिये बाप के नाम से पुकारा जायेगा और कुछ लोग कहते हैं कि आख़िरत में बच्चों को माँ के नाम से पुकारा जायेगा?

जवाब नंबर : 38537

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़तवा : 890-728/B=5/1433

तबरानी में एक रिवायत आई है कि जिस में ये है कि क़ियामत के दिन लोगों को उन की माँ के नाम से पुकारा जायेगा, मगर ये रिवायत ज़ईफ़ और मुन्किर है, इस के बर ख़िलाफ़ बुख़ारी शरीफ़ में रिवायत आई है कि बाप के नाम से पुकारा जायेगा, ये रिवायत सहीह है, मुलाहिज़ा हो बुखारी शरीफ़ (۹۱۲/۲)। जो लोग माँ के नाम से पुकारे जाने की बात कहते हैं, बुख़ारी शरीफ़ की हदीस से उस की तरदीद हो जाती है लिहाज़ा सहीह यही है कि क़ियामत के दिन लोग अपने बाप के नाम से पुकारे जायेंगे। इस की पूरी तफ़सील फ़त्हुल बारी शरह बुख़ारी ۴۶۴/۱۰ में मुलाहिज़ा फ़रमायें।

واللہ تعالیٰ اعلم

दारुल इफ़्ता
दारुल उलूम देवबन्द

इस मसअले पर और तफ़सील बयान की जा सकती है लेकिन हम इतने पर इक्तिफ़ा करते हुये अब ख़ुलासे की तरफ़ आते हैं।

रिवायात मुख़्तलिफ़ हैं जिन से किसी एक क़ौल को सहीह क़रार देकर बाक़ी सब का रद्द कर देना यहाँ पर मुनासिब मालूम नहीं होता। अगर रिवायात की सिहत पर बात करें तो बुख़ारी शरीफ़ की रिवायत की सनद पर भी कलाम मौजूद है। इस के बाद हमारे मुहक़्क़िक़ीन उलमा ने माँओं के नाम से पुकारे जाने को तरजीह भी दी है लिहाज़ा ऐसे में तत्बीक़ की सूरत इख़्तियार की जाये तो मसअला वाज़ेह है।

हमने शैख़ अब्दुल हक़ मुहद्दिस द्हेलवी के हवाले से जो नक़्ल किया है :

दोनों रिवायतों में तत्बीक़ इस तरह भी हो सकती है कि सहीहुल नसब लोगों को बाप के नाम से पुकारा जायेगा और सुनन अबी दाऊद की रिवायत इस के मुतल्लिक़ से है, या ये कि बाज़ को बाप के नाम से पुकारा जायेगा और बाज़ को माँओं के नाम से, यही तत्बीक़ ज़्यादा सहीह है। फ़तावा ख़लीलिया में और मुल्ला अली क़ारी के क़ौल से भी ये वाज़ेह है।

इस मसअले की तहक़ीक़ पर हम ने ये रिसाला तरतीब देने की स'आदत हासिल की। अल्लाह हमारा लिखना क़ुबूल फ़रमाये। आप

भी हमारे लिये दुआ फ़रमायें कि हम इसी तरह मज़ीद तहक़ीक़ी मवाद पेश कर के अहले सुन्नत की ख़िदमत में अपना एक हिस्सा दर्ज कर सकें।

अब्दे मुस्तफ़ा ऑफ़िशियल

हिंदी ज़ुबान में हमारी दूसरी किताबें और रसाइल :

बहारे तहरीर (अब तक 13 हिस्सों में)
अल्लाह त'आला को ऊपरवाला या अल्लाह मियाँ कहना कैसा?
अज़ाने बिलाल और सूरज का निकलना
इश्के मजाज़ी - मुंतखब मज़ामीन का मजमुआ
गाना बजाना बंद करो, तुम मुसलमान हो!
शबे मेराज गौसे पाक
शबे मेराज नालैन अर्श पर
हज़रते उवैस क़रनी का एक वाकिया
डॉक्टर ताहिर और वक़ारे मिल्लत
ग़ैरे सहाबा में रदिअल्लाहु त'आला अन्हु का इस्तिमाल
चंद वाकियाते कर्बला का तहक़ीक़ी जाइज़ा
बिंते हव्वा
सेक्स नॉलेज
हज़रते अय्यूब अलैहिस्सलाम के वाकिये पर तहक़ीक़
औरत का जनाज़ा
एक आशिक़ की कहानी अल्लामा इब्ने जौज़ी की ज़ुबानी
40 अहादीसे शफा'अत
हैज़, निफ़ास और इस्तिहाज़ा का बयान बहारे शरीअत से
क़ियामत के दिन लोगों को किस के नाम के साथ पुकारा जाएगा?
ज़न और यक़ीन

ABOUT US

Abde Mustafa Official Is A Team
From **Ahle Sunnat Wa Jama'at**
Working **Since 2014** On The Aim To Propagate
Quraan And Sunnah
Through Electronic And Print Media.

We are :

Writing articles, composing & publishing books, running a special **matrimonial service** for Ahle Sunnat

Visit our official website

www.abdemustafa.in

Books Library

books.abdemustafa.in
about 100+ tehqeeqi pamphlets & books are available in multiple languages.

E Nikah Matrimony

www.enikah.in
there is also a channel on Telegram
t.me/Enikah (Search “E Nikah Service” on Telegram)

Find us on Social Media Networks :

Subscribe us on YouTube @abdemustafaofficial
like and follow us on Facebook & Instagram @abdemustafaofficial
Join our official Telegram Channel t.me/abdemustafaofficial
Books Library on Telegram t.me/abdemustafalibrary
or search “Abde Mustafa Official” on Google
for more details WhatsApp on **+919102520764**

AMO
Abde Mustafa Official